पाठ योजना बनाकर पढ़ाने के अनुभव

आरती पाण्डेय

पाठ्यपुस्तक के पाठ की कहानी को सुविचारित योजना बनाकर कक्षा में कैसे पढ़ाया जाए, इसकी एक अनुभवपरक रूपरेखा इस लेख में है। शिक्षिका, सीखने के प्रतिफल के आधार पर कहानी शिक्षण के उद्देश्य तय करती हैं, फिर ऐसे प्रभावी तरीक़ों को आज़माती हैं जिनसे उद्देश्यों के अनुरूप परिणाम हासिल किए जा सकें। वे कितनी सफल होती हैं; क्या चुनौतियाँ आती हैं; और कैसे वे इनको सुलझाती हैं; यह सब लेख का हिस्सा है।

चित्र 1: कहानी सुनकर उससे जुड़े अपने अनुभव लिखते विद्यार्थी

कहानी के बारे में

मुंशी प्रेमचंद की कहानी 'नादान दोस्त', बच्चों के सरल एवं जिज्ञासु स्वभाव को दर्शाती है। कहानी में, केशव और श्यामा भाई-बहन हैं। उनके घर में कॉर्निस पर चिड़िया ने अण्डे दिए हैं। उनमें उत्सुकता है कि चिड़िया के अण्डे कैसे होंगे; उनमें से बच्चे कैसे निकलेंगे; वह क्या खाएँगे; कैसे रहेंगे; आदि। बच्चों ने दोपहर की गर्मी में अण्डों की सुरक्षा के लिए अनेक उपाय किए जिससे उन पर धूप और बरसात न पड़े। कटोरी में पानी और चावल के दाने भी रखे। चिड़िया के बच्चों की देखभाल करते हुए इन बच्चों से बहुत बड़ी नादानी हो जाती है जिसका उन्हें बहुत पछतावा होता है। यह कहानी आम बच्चों के परिवेश से जुड़ती है। चिड़ियाँ अकसर घरों में घोंसला बनाती हैं, इसलिए कक्षा का प्रत्येक बच्चा स्वयं को कहानी से जुड़ा हुआ महसूस करता है।

पाठ पढ़ाने का उद्देश्य

यह कहानी कक्षा 6 की *वसंत* पाठ्यपुस्तक में है। अपनी तैयारी हेतु मैंने इस कक्षा के लिए निर्धारित भाषा सीखने के प्रतिफल पढ़े। इन प्रतिफलों के आधार पर मुझे कहानी को पढ़ाने की योजना बनाते समय इसके कुछ उद्देश्य समझ में आए। इनमें शामिल हैं—वार्तालाप के माध्यम से बच्चों का कहानी से भावनात्मक जुड़ाव बन सके; वे पशु-पक्षियों व प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता से सोच सकें; बच्चे इस रचना को गहराई से जान-समझ सकें; और उनमें अन्य रचनाओं को पढ़ने की उत्सुकता बने। यह भी उद्देश्य था कि पाठ पढ़ाने के दौरान बच्चों को सोचने, अपना भाषा ज्ञान और शब्द सम्पदा बढ़ाने, कल्पनाशक्ति विकसित करने और अपने अनुभवों को ताज़ा करने के मौक़े मिलें। मुझे बच्चों में कहानी, उसकी घटनाओं व किरदार, आदि के बारे में समालोचक दृष्टिकोण से विचार करने पर भी काम करना था।

> अपनी तैयारी के लिए मैंने इस कक्षा के लिए निर्धारित भाषा सीखने के प्रतिफल पढ़े। इन प्रतिफलों के आधार पर मुझे कहानी को पढ़ाने की योजना बनाते समय इसके कुछ उद्देश्य समझ में आए।

चित्रों पर बच्चों के अनुभव से जुड़ती चर्चा

पहले दिन मैंने कहानी पढ़ते समय इसके चित्रों पर बच्चों से बात की जिससे वे कहानी से परिचित हो सकें। चित्र दिखाकर पूछा, "इसमें क्या-क्या दिख रहा है?" बच्चों ने कहा, "एक चिड़िया अपने अण्डों पर बैठी है, जैसे मुर्ग़ी अपने अण्डों पर बैठती है। वह अण्डे 'से' रही है जिससे उनमें बच्चे आ जाएँ।" मुनमुन ने कहा, "चिड़िया चारों तरफ़ नज़र दौड़ा रही है, कहीं कोई उसके अण्डे ले न जाए।" इसी तरह, दूसरे चित्र पर मीनू ने जवाब दिया, "मुझे लग रहा है, चिड़िया कुछ बता रही है। जैसे उसके अण्डों पर ख़तरा आने वाला हो!" तीसरे चित्र के बारे में बच्चों ने कहा, "केशव और श्यामा चिड़िया के अण्डों को ऊपर चढ़कर देख रहे हैं, उन्हें छू रहे हैं, अण्डों की जगह पर सफ़ाई कर रहे हैं।" रोहित ने कहा, "लेकिन चिड़िया के अण्डों को छूना नहीं चाहिए। ऐसा मेरी दादी कहती हैं।" इस बात से काफ़ी बच्चे सहमत थे। वे कह रहे थे, जब हम चिड़िया का घोंसला और अण्डा देख लेते हैं तो हमारा मन उन्हें पास से देखने का ज़रूर करता है। इस पूरी बातचीत में बच्चे चित्रों से अपने आस-पास को बख़ूबी जोड़ पा रहे थे।

एक और चित्र जिसमें दो बच्चे और उनकी माँ है। चित्र के बारे में पूछते ही बच्चों ने कहा, "ज़रूर भाई-बहन ने चिड़िया के अण्डों से छेड़खानी की होगी, मम्मी उनकी पिटाई कर रही हैं।" कुछ बच्चों ने कहा, "नहीं।" रूपाली ने कहा, "पक्का पिटाई हो रही है। ऐसी बातों पर मम्मी समझाती नहीं हैं।"

चित्र 2 : चिड़िया के बच्चों व अण्डों की देखभाल के लिए उत्सुक बच्चे

(चित्र एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक 'वसंत' से साभार)

चलो, अब कहानी पढ़ते हैं

धानिया ने कहा, "यह तो कहानी पढ़कर ही पता चलेगा। चलो, कहानी पढ़ते हैं!" बच्चों में जिज्ञासा थी, आख़िर कहानी में ऐसा क्या हुआ है! जो बच्चे किताब पढ़ लेते हैं, पढ़ते-पढ़ते कह रहे थे, "देखा! मैंने सही कहा था। बच्चे चिड़िया के अण्डों को छू रहे हैं। अपनी मम्मी को भी नहीं बताया।" जो बच्चे अभी पढ़ने के शुरुआती स्तर पर हैं, उनके साथ बैठकर मैंने अक्षर और मात्रा जोड़कर पढ़ाने की कोशिश की। चित्रों के माध्यम से वे कहानी से जुड़ तो रहे थे, लेकिन पढ़ नहीं सकते थे। इन बच्चों से मैंने एक पैराग्राफ़ बार-बार पढ़वाया। परिणाम यह हुआ कि बच्चों की उन अक्षरों, शब्दों और वाक्यों से जैसे जान-पहचान हो गई थी। वह अनुमान लगाकर पढ़ने की कोशिश कर रहे थे। मैंने कमज़ोर और पढ़ने में ठीक बच्चों का समूह बनाया। एक साथ पढ़ने से भी बच्चे देखकर पढ़ना सीख रहे थे। वे बच्चे जो अच्छी तरह से पढ़-लिख लेते हैं, उन्होंने बहुत मन से कहानी पढ़ी।

नए शब्दों और मुहावरों के अर्थ बनाना

दूसरे दिन मैंने बच्चों को कहानी के कुछ अंश पढ़कर सुनाए। मैं कहानी में आए नए व कठिन शब्दों और मुहावरों के अर्थ समझाने पर भी ज़ोर दे रही थी। जैसे—करुण स्वर। इसका जवाब केवल मुनमुन ने दिया, "उदास या दुःखी होकर बोलना।" चेहरे का रंग उड़ना, सुरेन्द्र ने बताया, "डर जाना, अफ़सोस करना।" ज़्यादातर बच्चों द्वारा अर्थ न बताने का कारण यह समझ में आया कि शब्द थोड़ा बड़ा था। अब मैंने 'भीगी बिल्ली' वाक्य को सामने रखा। कक्षा के आधे से ज़्यादा बच्चों ने उत्तर दिया, "सीधा-सादा, एकदम मासूम बनना।" उनकी बातचीत से पता चला कि अधिकतर बच्चे अभी मुहावरों से परिचित नहीं हैं। तब मैंने कुछ मुहावरों को श्यामपट्ट पर लिखा। जैसे—नौ दो ग्यारह हो जाना, ईद का चाँद होना, आँखों का तारा, आदि। एक बच्चे ने तुरन्त ही कुछ और मुहावरे बताए। मसलन, नाक में दम करना, ईंट का जवाब पत्थर से देना, आदि। उसके जवाब से लग रहा था कि वह इन वाक्यों को अपने बोलचाल या कही-सुनी बातों से जोड़ रहा था। पूछने पर उसने बताया कि जब मम्मी को परेशान करते हैं तो वे कहती हैं, तुमने मेरी नाक में दम कर रखा है। इस जवाब का पूरी कक्षा आनन्द ले रही थी।

मैंने बच्चों को बताया कि इस प्रकार के वाक्यों को मुहावरा कहते हैं। इनसे हम अपनी बात बहुत कम शब्दों में

प्रभावशाली ढंग से रख सकते हैं। अब हर बच्चा मुहावरों का उपयोग कर अपने-अपने वाक्य बनाने की कोशिश कर रहा था।

कहानी और उसका घटनाक्रम

आगे कहानी के घटनाक्रम पर बातचीत हुई। बच्चों ने बताया कि इस कहानी में एक चिड़िया ने केशव और श्यामा के घर में कॉर्निस पर अण्डे दिए थे। बच्चों का अण्डे छूने का मन कर रहा था। उन्होंने बहाने से उनके पास सामान रखना शुरू कर दिया और अण्डे फूट गए। श्याम ने घटनाक्रम बताया, "केशव और श्यामा के घर चिड़िया ने अण्डे दिए। अण्डों के पास उन्होंने खाने-पीने का सामान रखा कि चिड़िया को बाहर नहीं जाना पड़ेगा। लेकिन चिड़िया तो अपने मन की करती है। चुपके-चुपके केशव और श्यामा ने जिज्ञासावश अण्डों को छू लिया, और अपनी माँ को भी नहीं बताया। चिड़िया को यह अच्छा नहीं लगा। अण्डे फूट गए। केशव और श्यामा से बहुत बड़ा बचपना हो गया। उन्हें बहुत अफ़सोस भी हो रहा था।"

> **इस पाठ पर काम करके मैं स्वयं का मूल्यांकन भी कर पाई कि निर्धारित उद्देश्यों को मैंने कहाँ तक हासिल किया; क्या छूट गया; क्या समस्या और चुनौतियाँ आईं; आदि।**

कहानी का परिवेश और समय काल

अब मैंने बच्चों से एक प्रश्न किया, "यह कहानी किस दौर में लिखी गई होगी; किस परिवेश की होगी; और उस समय का जीवन कैसा रहा होगा?" किसी ने कहा, "यह हमारे गाँव के पुराने समय की है।" राजू ने उत्तर दिया, "जब घर खपरैल और ईंटों के बने होते थे उसी समय की है क्योंकि चिड़िया खपरैल और झोपड़ी में ज़्यादा घोंसले बनाती है।" मीनू ने बहुत अलग उत्तर दिया, "यह हमारे दादा-दादी के ज़माने की हो सकती है क्योंकि उस समय बहुत ज़्यादा पेड़ व खेत हुआ करते थे।" बच्चे प्रश्न के बारे बहुत कुछ सोच पा रहे थे। धानिया ने कहा, "आजकल तो पता ही नहीं चलता कि चिड़िया कब और कहाँ घोंसला बनाती है।"

बनी नई कहानी की सम्भावना

जब यह बात आई कि टूट गए अण्डों के बारे में केशव और श्यामा आपस में ही सवाल-जवाब करके अपने दिल को तसल्ली क्यों दिया करते थे, बच्चों के काफ़ी दिलचस्प उत्तर आए।

मुनमुन ने बताया, "उनका कोई दोस्त नहीं था। दोस्त होता तो कहानी में उसका भी नाम ज़रूर होता। सब मिलकर बातचीत कर लिए होते तो शायद अण्डे बच गए होते। दोस्त बड़े काम के होते हैं। दोस्त कभी-कभी अच्छी राय देते हैं।" मुनमुन के इस उत्तर ने कहानी को एक नया मोड़ दे दिया कि उनका एक और दोस्त होना चाहिए था। मैंने मुनमुन से कहा, "कल्पना करो, अगर केशव और श्यामा का कोई दोस्त होता तो कहानी में क्या बदलाव आता!" मुनमुन ने उत्साहित होकर कहा, "हाँ मैम, मैं सोचकर एक नई कहानी बनाकर दिखाऊँगी!"

कहानी के किरदार

"कहानी पढ़ते समय तुम्हें केशव और श्यामा के बारे में क्या पता चलता है?" पूछने पर काफ़ी बच्चों ने उत्तर दिया कि उनको अपनी ग़लती का एहसास हो गया था। वह बहुत अच्छे बच्चे थे, और अण्डों से बच्चे निकलना देखना चाहते थे। वे चिड़िया की मदद करना चाहते थे, लेकिन अण्डा फूट गया। उन्हें बहुत अफ़सोस भी हो रहा था।

क्या अच्छा लगा और क्या नहीं ?

"कहानी में तुम्हें कहाँ-कहाँ बहुत अच्छा लगा?" पूछने पर जवाब आया, "हमें तो पूरी कहानी बहुत अच्छी लगी।" सुरेन्द्र ने जवाब दिया, "अण्डे फूट जाने के बाद अम्मा दोनों बच्चों को डाँटने लगीं। उस समय श्यामा, अम्मा की तरफ़ हो गई, यह मुझे अच्छा लगा।" कहानी पढ़ते समय कक्षा के सभी बच्चे, केशव ने जब श्यामा को डाँटा, "तेरे सर पर।", इस पंक्ति को बहुत मज़े लेकर पढ़ रहे थे।

रोहित बोला, "श्यामा ने जब सारा इल्ज़ाम केशव पर लगा दिया, तब उन्हें अपनी नादानी का एहसास हुआ।" राजू ने कहा, "जब चिड़िया के बच्चों को देखने के लिए वे दोनों बहुत ख़ुश थे, और श्यामा, केशव से बार-बार पूछ रही थी, 'भैया बच्चे कैसे हैं; वह क्या खाएँगे; कैसे लग रहे हैं?' मुझे अच्छा लगा।"

बच्चों को कहानी में जब इतना कुछ अच्छा लगा, फिर यह प्रश्न करना बहुत ज़रूरी था, "कहानी में तुम्हें क्या अच्छा नहीं लगा?", ताकि वह और अधिक कल्पना करके अपनी बातों को रख सकें। प्रतिमा का जवाब था, "जब अण्डे गिरकर टूट गए, मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगा।" काफ़ी बच्चे इस बात का समर्थन कर रहे थे।

एक अलग दृष्टिकोण

किशन की बात ने तो पूरी कहानी को ही पलटकर रख दिया। उसने कहा, "चिड़िया को अण्डा नहीं गिराना चाहिए था। उसको यह समझना चाहिए था कि जैसे उसके बच्चे हैं, केशव और श्यामा भी तो किसी के बच्चे हैं। उनके छूने से चिड़िया को इतना बुरा लग गया कि उसने अपना अण्डा गिरा दिया! इससे दोनों बच्चों को डाँट भी पड़ी और केशव को रात में नींद भी नहीं आई।" इस उत्तर से कक्षा में चर्चा होने लगी कि यह कैसे हो सकता है, चिड़िया ऐसा नहीं सोच सकती है! वह अपने घोंसले और बच्चों के बारे में ही सोचती है, उसके पास इन्सानों जैसी बुद्धि नहीं होती। मुनमुन ने कहा, "अरे बुद्धू! उनके पास हमसे ज़्यादा बुद्धि होती है। अगर वह ऐसा सोचती तो बताती कैसे?"

लेखक से जुड़ाव

अब बच्चों को कहानी के लेखक से परिचित कराने की बारी थी। "इतनी सुन्दर कहानी आख़िर किसने लिखी होगी?" मैंने पूछा। बच्चों को पता नहीं था। मैंने मुंशी प्रेमचंद का चित्र मोबाइल में दिखाते हुए कहा, "यह कहानी इन्होंने लिखी है। क्या तुमने प्रेमचंद की लिखी कोई दूसरी कहानी पढ़ी है?" बच्चों को जानकारी नहीं थी। मैंने कक्षा 5 के पाठ 'ईदगाह' की याद दिलाई। सभी बच्चे ख़ुश हो गए। लेखक से परिचय ज़रूरी था जिससे उनकी लिखीं अन्य कहानियों की किताबें बच्चों को पढ़ने को दी जाएँ। यह प्रयास मैं अपने पुस्तकालय से ज़रूर करूँगी।

मैंने क्या जाना, क्या समझा ?

इस पाठ पर काम करके मैं स्वयं का मूल्यांकन भी कर पाई कि निर्धारित उद्देश्यों को मैंने कहाँ तक हासिल किया; क्या छूट गया; क्या समस्या और चुनौतियाँ आईं; आदि। मैंने देखा, पढ़ने के शुरुआती स्तर के ज़्यादातर बच्चे बातचीत में भाग नहीं ले पा रहे थे। एक बालिका ने बताया, "यह कहानी बहुत बड़ी है। मेरी समझ में नहीं आ रही है।" कक्षा में उसके जैसे और भी बच्चे हैं जिन्होंने इस पाठ पर समझ बनाने और अपनी बात रखने में कठिनाई महसूस की। इसके लिए मुझे उनके साथ *बरखा* सीरीज़ व अन्य बाल साहित्य की मदद से काम करना होगा।

शिक्षण योजना बनाकर काम करने से मैंने देखा कि बच्चे रचना, किरदारों और घटनाओं से स्वयं को जोड़ पा रहे थे। उनका भावनात्मक जुड़ाव उनके उत्तरों में देखने को मिल रहा था। हर घटना और किरदार के बारे में उनकी राय और विचार बन रहे थे। प्रत्येक बच्चा अपना तर्क देकर सहमति-असहमति, दोनों जता रहा था। इससे उनको और भी अधिक सोचने-समझने, कल्पना करने और अपनी बात को रखने का मौक़ा मिल रहा था। कई बार बच्चों की प्रतिक्रियाएँ अचम्भित करने वाली थीं। उनमें अन्य रचनाओं के प्रति उत्सुकता भी देखने को मिली। इस प्रकार बच्चों के साथ काम करके उनसे एक अलग जुड़ाव महसूस हुआ।

चित्र 3 : माँ को घटना के बारे में बताते बच्चे

(चित्र एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तक "वसंत" से साभार)

आरती पाण्डेय राजकीय माध्यमिक विद्यालय रामनगर, रुद्रपुर, ज़िला ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड में सहायक अध्यापिका हैं। उन्हें चित्रकारी करना और कविताएँ लिखना पसन्द है। उनकी किताबें पढ़ने और बच्चों से जुड़ाव बनाकर कुछ नए ढंग से सीखने-सिखाने में विशेष दिलचस्पी है।

सम्पर्क : articsc83@gmail.com